श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा — श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः — जय गुरु मान

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रत्नम्

वर्ष–2, अंक–33 28 मार्च, 2019 जोधपुर (राज.)

हिन्दी पाक्षिक पृष्ठ–16 मूल्य 5/– प्रति अंक

RNI No. RAJHIN/2015/66547

अधिकारों के साथ कर्त्तव्य पालन

आज समस्याएँ तो हैं, साथ–ही–साथ युवा पीढ़ी में समन्वय की कमी भी है। समन्वय की कमी के कारणों से युवकों को जूझना पड़ता है। युवकों को कर्त्तव्य के बजाय अधिकारों की अधिक चिन्ता है। कहना होगा–समस्या का मूल इसी में निहित है। हर आदमी कर्त्तव्य करता जाय तो अधिकार बिना माँगे मिलते रहते हैं। अधिकार माँगता रहे और कर्त्तव्य का पालन नहीं करे तो अधिकार से ''अ'' का लोप हो जाता है। जो कर्त्तव्य का निर्वहन कर रहा है, उसे अधिकार की जरुरत नहीं रहती क्योंकि जो काम करने वाला है, ड्यूटी निभाने वाला है, वह सबको हाथ जोड़कर चलता है। समन्वय करके चलने वाला सबका प्रिय होता है।

–हीरा प्रवचन–पीयुष भाग 5 से साभार

अध्यक्ष की कलम से

आदरणीय रत्नबन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र !

देव-गुरु-धर्म के पुण्य-प्रताप से आप सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। आप रत्नसंघ के सम्मानित सदस्य हैं अतः संघ-सेवा, संत-सेवा, श्रुत-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य सेवा और प्राणिमात्र की सेवा का भाव तो हमारे गुरुभ्राताओं में सदा से रहा है और यह भाव सदा रहना भी चाहिए। आप-हम-सब गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय और गुरु हीरा के व्यसन-त्याग सन्देश को जीवन-व्यवहार में चरितार्थ करें तो हमें जैन कहलाने में गर्व होगा। हम-सब सौभाग्यशाली हैं क्योंकि हमें गुरु की सेवा-भक्ति का सुयोग तो प्राप्त है ही, पारिवारिक संस्कारों से संस्कारित हमारे जीवन में जन्म से अनेक सद्गुण स्वतः समाहित हैं। फिर, धर्माचार्य-धर्मगुरु पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द की सतत एवं प्रभावी प्रेरणा से हम ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना एवं व्रत-नियमों में निरन्तर सक्रिय-सजग होते जा रहे हैं। कहना चाहिए हमारा दायित्व पहले की अपेक्षा अधिक प्रभावी होना चाहिए। रत्नसंघ में गुरु-भक्ति की भावना का ही सुपरिणाम है कि हमारे संघ-सदस्य दर्शन-वन्दन और प्रवचन-श्रवण तक ही नहीं, विहार-सेवा के साथ जीवन-निर्माण में सहायक व्रत-प्रत्याख्यानों की परिपालना करते आ रहे हैं। हम, सेवा-धर्म की साधना में उत्तरोत्तर आगे बढ़ें इस पुनीत भावना से मैं आप-सब गुरुभ्राताओं से विनम्र अनुरोध करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि हम घर-परिवार, संघ-समाज ही नहीं, प्रदेश व देश की सेवा में भी सक्रिय-सजग बनें।

जैन समाज सेवा-धर्म के विविध आयामों में शुरु से जागृत रहा है। हमारी शुभ-भावना का यह उज्ज्वल पक्ष है। हमें अपने इस पक्ष को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दृढ़ बनाए रखना तो है ही, संघ-समाज में परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग की भावना बढ़ाते हुए जन-जन के मन में आत्मीयता-अपनत्व पैदा करें जिससे कि हमारा व्यवहार-पक्ष सबके लिए प्रेरणादायी बनें। आप-सब सुज्ञ हैं इसलिए अधिक विस्तार के बजाय संकेतरुप में जो भी आग्रह-अनुरोध किया जा रहा है उसे हम जीवन-जीने का माध्यम बनाएं तो निश्चित रुप से हमारी छवि जो पहले से उज्ज्वल हैं, उसमें गुणात्मक-सुधार आयेगा।

"जीओ और जीने दो" की अवधारणा जन-जन के मन में जगाने वाले चरम तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर स्वामी का जन्म-कल्याणक एवं तप और दान का विशिष्ट पर्व "अक्षय तृतीया" समीपस्थ है। हम पर्व-दिवसों को उल्लासपूर्वक मनाएं। आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. चैत्र शुक्ला अष्टमी, शनिवार तदनुसार 13 अप्रेल को वर्ष 2019 के कतिपय चातुर्मास घोषित करेंगे इस संभावना के परिप्रेक्ष्य में चातुर्मास की विनति करने वाले श्रीसंघों से अनुरोध है कि संघ स्तर पर क्या-क्या कार्यक्रम करेंगे, तत्सम्बन्धी कार्य-योजना अभी से सुनिश्चित करें तो चातुर्मास की विनति और अधिक प्रभावी होंगी।

संघ-दीप्ति में आपकी भूमिका और भागीदारी बढ़े, इस शुभ-भावना से मैं आपके सुखद-समुज्ज्वल और यशस्वी जीवन की मंगलकामना करता हूँ।

आपका अपना
प्रकाश टाटिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

विचरण–विहार

(दिनांक 25.03.2019 .की स्थिति)

☆ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 10
सुराणा मार्केट, पाली–मारवाड़

☆ परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 7
शक्तिनगर, जोधपुर

☆ सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 **चण्डीसर गांव (गुज.)**

☆ तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5
दिग्विजय नगर, जोधपुर

☆ साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8
इस्कॉन मन्दिर रोड, जयपुर

☆ विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 **पुष्कर रोड़, अजमेर**

☆ विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 **भायन्दर वेस्ट (महा.)**

☆ व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा.आदि ठाणा 3 **आदर्श नगर,अजमेर**

☆ व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 **पाली–मारवाड़**

☆ व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा 8 **बासनी, जोधपुर**

☆ व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 10 **हिरीयूर (कर्ना.)**

☆ व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 6 **गेगल गांव (राज.)**

☆ व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 5 **चित्तौड़गढ़**

☆ व्याख्यात्री महासती श्री नि:शल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 **हावेरी (कर्ना.)**

☆ व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 **वजीरपुर (हरियाणा)**

☆ सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 **ताहराबाद (महा.)**

☆ व्याख्यात्री महासती श्री पुष्पलताजी म.सा. आदि ठाणा 3 **दूदू (राज.)**

☆ व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 **बैंगलुरु (कर्ना.)**

☆ महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 **शेगांव (महा.)**

☆ व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 **देवलिया (राज.)**

☆ व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 **गुलाब नगर, जोधपुर**

☆ व्याख्यात्री महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 **मानमल गांव (राज.)**

सभी संत-सती मण्डल के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में समाधि है तथा विचरण विहार सुख-शांति पूर्वक चल रहा है।

परमाराध्य पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का स्वास्थ्य की अनुकूलता के साथ सुराणा मार्केट स्थित सामायिक–स्वाध्याय भवन में मंगलमय पावन पदार्पण

श्रमण संस्कृति व जिनशासन के दैदीप्यमान नक्षत्र आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, दिव्य दिवाकर, ज्ञान सुधाकर, गुण रत्नाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रि भोजन त्याग, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, अष्ट सम्पदा सम्पन्न आसन्न उपकारी परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी सरसव्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 10 के विचरण-विहार का क्रम संघ-शिरोमणी के शारीरिक अशक्तता व स्वास्थ्य की पर्याप्त समीचीनता के अभाव में भी ढाणियों, रेतीले टिब्बों व धोरों की धरा के मध्य गतिमान रहा।

पूज्य आचार्यप्रवर की सदैव यही भावना रही है कि बिना किसी विशेष कारण के विचरण-विहार में किसी भी प्रकार का अवलम्बन नहीं लिया जाय। संत-सतीवृन्द द्वारा इसका यथावत पालन किया जा रहा है। अस्वस्थता वाले संत-सतीवृन्द आज भी थोड़ा-थोड़ा अनुकूलता अनुसार विहार फरमाकर इस निर्देश का समादर कर रहे हैं। स्वयं भगवन्त ने शारीरिक अनुकूलता के अभाव में भी कई बार ऐसे विहार कर आत्मबल का परिचय दिया है। रणसीगांव से भी 5 संतों का अलग-अलग विहार करवाकर आपश्री 5 ठाणा से बालागांव तक विहार कर पधारे। यह एक साहसिक व जोखिम भरा निर्णय था। शरीर में नहींवत् साता वाली स्थिति में विहार करने के समाचार सुनते ही शिष्य संत उग्र विहार कर भगवन् के चरणों में पधार आये। फाल्गुनी चौमासी सन्निकट है, भगवन् पैदल जिस गति से चल पा रहे हैं, पाली पहुंच पाना संभव नहीं। स्वस्थ होने के बाद विहार की गति कैसे बढ़ाई जाय। महान् अध्यवसायी मुनिश्री के नेतृत्व में सभी इस बात के पक्षधर रहे कि गुरुदेव जितना चल सकते हैं उतना चले, थोड़ा-थोड़ा हम सब मिलकर ले जाने का दायित्व निभाये। इस तरह 73 किलोमीटर के लगभग का विहार 10-12 दिन में आसानी से किया जा सकता है। युवा संतों की टीम आतुरता से विहार का दिन आने की व इस शरीर से अपने आराध्य की किंचित् सेवा कर पाने की प्रतीक्षा में थी। इधर जोधपुर संघ के पदाधिकारी व सदस्यों का यह निवेदन था कि उपचार की दृष्टि से जोधपुर अधिक साधन-सुविधा वाला क्षेत्र है, आप कृपा कर जोधपुर ही पधारने की स्वीकृति फरमाये। पूज्य आचार्यप्रवर ने स्पष्ट शब्दों में यही कहा कि मैं अभी चलने की स्थिति में नहीं हूं। जोधपुर वालों की भावना प्रमोदजन्य है। फिलहाल पाली वालों को पाली फरसने की बात खयाल दी हुई है, स्वास्थ्य समाधि के साथ दिया हुआ आश्वासन पूरा करने की भावना है।

स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव वाली अनियमितता से पूज्य गुरुदेव लगभग 6 दिन बाला गांव विराजे। साता पृच्छा की भावना से श्रद्धालु गुरुभक्तों का बाला गांव में आने का क्रम अनवरत बना रहा। जोधपुर, पीपाड़ व पाली वालों की उपस्थिति प्रायः रोजाना रही। बालागांव प्रवास काल में श्री मनोहरलाल जी रायसोनी, श्री किशनलाल जी

वैदमुथा, श्री राजेन्द्र जी रायसोनी, श्री बुधराज जी लुणावत की उल्लेखनीय सेवाएं रही। आगत दर्शनार्थियों की अहोभाव से आतिथ्य सत्कार भावना का लाभ लेकर भाग्यशालिता का अनुभव किया। पूज्य आचार्य भगवन्त के स्वास्थ्य कारण से विराजने से वहां समवशरण सा परिदृश्य रहा। बाला गांव के सरपंच जी सहित जैन-अजैन भाइयों ने फाल्गुनी चौमासी के प्रसंग का लाभ प्रदान करने की पूज्य प्रवर के पावन श्रीचरणों में पुरजोर विनति रखी। मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. की सांसारिक भतीजी लुणावत परिवार में होने से श्री बुधराज जी आदि सभी परिवारजनों की श्रद्धाभक्ति अवर्णनीय रही। वर्षों बाद गांव में संतों के शिरोमणी का पधारना हुआ। प्रमुदित भाव से उल्लसित मन से सेवा-सन्निद्धि का सुन्दर व यथोचित लाभ लिया।

4 मार्च को सायं एक किलोमीटर का विहार फरमा कर बाला गांव बाहर स्थित मकान पर रात्रि साधना कर 5 मार्च को होलपुर खुर्द की धरा पर कल्याणकारी पूज्य गुरुदेव के पाद-युग्म सुशोभित हुए। 6 मार्च को हरियाडा की धरा पर पधारने पर यहां के प्रवासी बन्धुओं ने अंतरंग भावना से पावन सेवा-सन्निधि का सुन्दर लाभ लिया। तपस्वी युवारत्न श्री प्रवीण जी बाफना पालनपुर वालों का ससुराल पक्ष होने से उन्होंने भी पूर्व व पश्चात् की विहार सेवा का लाभ लिया। बाला गांव वाले भी विहार सेवा का लाभ ले रहे थे। विहार में प्रायः रोजाना अनेक स्थलों के भाई-बहिनों की उपस्थित बराबर रही।

7 मार्च की सुप्रभात में प्रशान्त प्रतिमा विभूति का आगमन चौपड़ा की धरा पर हुआ। 8 मार्च को जिनशासन गौरव पूज्य श्री ने धुरासनी की धरा को पदरज से पावन की। यहां पर रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर दर्शन-वन्दन का लाभ लेते हुए गुरुदेव से मार्गदर्शन एवं मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। 9 मार्च को जिंजड़ा में शुभ परमाणु पुद्गलों का वर्षण कर 10 मार्च को दुधिया में विराज कर विशेष अस्वस्थता वाली अवस्था में भी अनुकूलता का सर्जन करते हुए साधना-आराधना में आत्मलीन रहते हुए 11 को बागड़िया में रात्रि साधना कर आत्मलक्ष्यी पूज्य गुरुदेव 12 को पाली नगर के समीपस्थ रिको इण्डस्ट्रीयल एरिया में पधारे। पीपाड़, जोधपुर व पाली वालों की विहार सेवाएं अहर्निश रही। पाली वालों का तो दिन में मन ही नहीं लगता था। पूज्य आचार्य भगवन्त के स्वास्थ्य को लेकर चिन्तित रहा करते। अतः दिन में 3-4 बार साता पृच्छा की भावना से उनके कदम सहज ही जहां गुरुदेव विराजते वहां के लिए बढ़ जाते। अन्तर्मन में जब श्रद्धाभक्ति की धारा प्रवाहित होती है तो तब समय नहीं है, जैसे शब्द शब्दकोष में नहीं रहा करते। बार-बार आना भारी नहीं लगता, ऐसा ही स्वरूप पाली वाले गुरुभक्तों में देखने को मिला।

13 मार्च को मारवाड़ के हृदय स्थल पाली में कल्याणकारी, परमोपकारी पूज्य आचार्य भगवन्त का मंगलमय पावन पदार्पण हुआ। वीर दुर्गादास नगर में भगवान् महावीर के शासन के 82वें पट्टधर, धीर-वीर-गंभीर अतिशयधारी, परमाराध्य के पधारने से रोटरी क्लब परिसर का वातावरण धर्ममय बन गया। दिवस भर भक्तों

की प्रमोदजन्य उपस्थिति बनी रहती। पूज्य आचार्य भगवन्त का स्वास्थ्य चिन्तनीय बना हुआ था, फिर भी हर आगत गुरु भगवन्त की एक झलक देख पाने की भावना लिए खड़ा रहता। गुरु भक्तों की भावना को दृष्टिगत रख संतों ने दर्शन के लिए दो समय निर्धारित किए। प्रातः प्रवचन के पश्चात् तथा दोपहर 2 बजे के बाद। यद्यपि पूज्य गुरुदेव कुछ समय बैठे रह सके इतनी शक्ति भी नहीं थी, फिर भी भक्तों की भावना को मान देकर संतों के अवलम्बन से विराजते। श्रमणोचित औषधोपचार की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई पर कहावत है कि रोग हाथी की तरह आता है और चींटी की तरह रेंगकर निकलता है। भक्त लोग भी पूज्यश्री के शीघ्र स्वस्थ होने की दुआ अन्तःस्थल से कर रहे हैं। अन्तरात्मा से गुरुभक्तों के यही शब्द उच्चरित हो रहे थे कि भगवन् शीघ्र ही स्वस्थ होकर संघ की दीप्ति को वर्धापित कर अनुगृहीत करेंगे।

बाला गांव से पाली पधारने के मध्य विहार समय में समीपस्थ व दूरस्थ क्षेत्रों से अनेक भाई-बहिनों की, संघों की, पदाधिकारियों की कई बार सार-संभाल व सेवाएं रही। उन सभी महानुभावों की सेवा व समयदान की भावना पर हृदय से आभार ज्ञापित करते हैं। आपकी महनीय सेवाओं पर इस संघ को नाज है।

व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा., सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 7 विगत 4 वर्षों से दर्शनों की अभिलाषा से अलीगढ़ रामपुरा का ऐतिहासिक चातुर्मास सम्पन्न कर शारीरिक अनुकूलता नहीं होते हुए भी दृढ़ मनोबल व आत्मविश्वास से विहार कर पूज्य आचार्य भगवन्त की चरण-सन्निधि में पधारे एवं आत्मतोष की अनुभूति की।

वीर दुर्गादास नगर में पदार्पण समय से प्रातःकालीन प्रार्थना श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनि जी म.सा., प्रवचन की शृंखला में श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. द्वारा दोहे की थीम पर आधारित प्रवचन शुक्ल पक्ष में तथा श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. के प्रवचन कृष्ण पक्ष में परोमपकारी गुरुदेव पर एवं महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. के ''को लाभः को हानिः'' पर आधारित प्रवचन चल रहे हैं। दोपहर 2 से 3 के मध्य ठाणांग सूत्र की वाचनी सुन्दर विवेचन के साथ सरसव्याख्यानी मुनिश्री फरमा रहे हैं। उभयकाल प्रतिक्रमण व संवर आराधना का क्रम चल रहा है। संघाध्यक्ष श्री छगनलाल जी लोढ़ा, निवर्तमान अध्यक्ष श्री रूपकुमार जी चौपड़ा, संघ-सेवी श्री पारसमलजी चौपड़ा, सेवाभावी श्री सुशीलजी हींगड़ आदि अनेक श्रावकों व स्वाध्याय प्रेमी सुश्राविका श्रीमती अनुपमाजी गोलेच्छा आदि बहिनों ने धर्माराधन कर अपने समय का सदुपयोग किया। संघमंत्री श्री रजनीश जी कर्णावट प्रभावी व सुन्दर शैली में संचालन का दायित्व संभाले हुए हैं। वरिष्ठ विशेषज्ञ डॉ. श्री सदासुख जी-जयपुर तथा वरिष्ठ चिकित्सक श्री अभिषेक जी तातेड़-जोधपुर के निर्देशन में अनुभवी चिकित्सक श्री महेन्द्रराज जी धारीवाल समय-समय पर पूज्य गुरुदेव की चिकित्सकीय संभाल बराबर कर रहे हैं। श्री रोहित जी शर्मा टेक्नीशियन की सेवाएं प्रमोदजन्य चल रही है।

पाली संघ के पदाधिकारी पूज्य प्रवर के चरणों में आने वाले प्रसंगों के लाभ के लिये कृपा बरसाने की विनति बराबर कर रहे थे। उनकी विनति को ध्यान में रखते हुए 16 मार्च को प्रवचन सभा में महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने

पूज्य आचार्य भगवन्त के निर्देशानुसार निम्नप्रसंगों की स्वीकृति द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव व स्वास्थ्य समाधि के साथ पाली के लिये फरमाई-

1. फाल्गुनी चौमासी 20 मार्च 2019, बुधवार
2. चैत्र कृष्णा अष्टमी 28 मार्च 2019 गुरुवार, भगवान् आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 81वां जन्म-दिवस
3. चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, 17 अप्रेल 2019 बुधवार, भगवान् महावीर जन्म-कल्याणक
4. वैशाख शुक्ला तृतीया, 7 मई 2019, मंगलवार, अक्षय तृतीया (तप एवं दान का विशिष्ट पर्व)
5. वैशाख शुक्ला अष्टमी, 12 मई 2019, रविवार, आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. का 28वाँ पुण्य-स्मृति दिवस।

महान् अध्यवसायी मुनि श्री ने फरमाया कि पूज्य गुरुदेव ने तो अनन्त कृपा का वर्षण कर झोली भर दी है। अब संघ तप-त्याग व धर्मध्यान की रूपरेखा बनाये। मेरी भावना है- गुरुदेव के 81वें जन्म-दिवस के प्रसंग पर 81 मिनी एकान्तर तप प्रारम्भ हो, जो अक्षय तृतीया तक चले। फाल्गुनी चौमासी पर तेले की आराधना हो, ऐसी प्रेरणा की जा रही है। पाली संघ इसके लिए प्रयत्नशील रहे।

प्रवास समय श्री छगनलाल जी लोढ़ा संघाध्यक्ष पाली के यहां रिक्त परिसर में प्रवचन का क्रम चला।

20 मार्च को फाल्गुनी चौमासी पर महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. एवं सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. का विशेष प्रवचनामृत हुआ। इस अवसर पर अनेक क्षेत्रों से भाई/बहिन अपनी विनतियां लेकर पधारे। इस पर गुरुदेव ने फरमाया कि चातुर्मास संबंधी निर्णय के लिये 13 अप्रेल का संकेत पूर्व में ही किया हुआ है। आपकी विनतियां ध्यान में हैं, जैसी क्षेत्र की फरसना है, समय के साथ निर्णय की भावना है।

आचार्य भगवन् की भावना थी कि स्थान परिवर्तन कर धर्मस्थान में साधना-आराधना का क्रम चले। अतः 21 मार्च को इस भावना से शनैः शनैः पावन श्री चरण बढ़ाते हुए मार्गस्थ मकान पर विराज कर रात्रि-साधना की। 22 मार्च को पूज्य गुरुदेव बड़ा बास पधार आये। प्रवचन पूर्व सूचनानुसार वीर दुर्गादास नगर में भक्तों की भावनानुसार रखा गया।

23 मार्च को प्रातः सुराणा मार्केट स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवन्त का स्वास्थ्य के उतार-चढ़ाव वाली स्थिति में मंगलमय प्रवेश हो गया है। पूज्य गुरुदेव के पधारने पर पाली संघ वालों में असीम उत्साह व भक्ति का सक्रिय रूप दिखाई दे रहा है। दिवस भर का वातावरण धर्ममय बना हुआ है।

परमश्रद्धेय पूज्य आचार्यप्रवर के श्रमणोचित औषधोपचार से अभी तक पूर्ण समाधि नहीं बनी है। महान् अध्यवसायी मुनि श्री व समस्त शिष्य मण्डली सेवा-सन्निधि में अहर्निश सन्नद्ध है। साता पहुंचे इसके लिए सजगता के साथ प्रयत्नरत है।

-जगदीश जैन

परीषहजयी संघनायक की मुनिप्रवरों के सहयोग से पाली तक की विहार–यात्रा : एक नजर में

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव आचार्य प्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के स्वास्थ्य में मेड़ता चातुर्मास पश्चात् से प्रतिकूलता के चलते संघनायक के विहार में विलम्ब रहा। स्वास्थ्य-सुधार हेतु श्रमणोचित औषद्योपचार से स्वास्थ्य-समाधि का प्रयास रहा, परन्तु स्वास्थ्य में समुचित सुधार नहीं होने पर मेड़ता के श्रावकों के साथ जोधपुर, पीपाड़, अजमेर, पाली, कोसाना, गोटन जैसे ग्राम-नगरों के श्रद्धालुओं का पुनःपुनः आग्रह-अनुरोध रहा कि जब तक विहार की स्थिति न हो, आप श्री मेड़ता ही विराजें।

संघ नायक सुनते सबकी हैं किन्तु आप श्री देश-काल-परिस्थिति का आंकलन कर आत्मबल से थोड़ा-थोड़ा ही सही, विहार की क्रमबद्धता बनाए रखने के पक्षधर रहे हैं। मेड़ता से सातलास, इन्दावड़, बीटण, बोरुन्दा, हरियाढाणा आदि-आदि मध्यान्तर के क्षेत्रों को एवं बीच-बीच में ढाणियों को पावन कर पूज्य गुरुदेव रणसी गाँव पधारे।

रणसीगाँव जैन समाज के कोठारी, चोरड़िया, मुणोत, गुन्देचा, गाँधी परिवार के आबाल-वृद्ध सभी जनों ने पलक-पाँवड़े बिछाए तो जैनेतर जन समुदाय विशेषकर चांपावत, जाट, माली, दर्जी, सुनार, ब्राह्मण आदि सभी जातियों के भाई-बहिनों ने सत्संग-सेवा और संत-समागम का लाभ तो लिया ही, जैन-जैनेतर सभी ने पुरजोर प्रार्थना श्रीचरणों में रखी कि भगवन! जब तक आप श्री का स्वास्थ्य-सुधर न जाय, आप श्री यहीं विराजने की कृपा करें।

आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव के स्वास्थ्य में इन्फेक्शन से शारीरिक कमजोरी के साथ सूजन आदि बढ़ जाने से विहार तो दूर, उठने-बैठने की परेशानी भी अनुभव होने लगी। जोधपुर-पीपाड़ के गुरुभक्तों ने चिकित्सकों के माध्यम से उपचार का पूरा-पूरा प्रयास किया। उपचार के साथ पूज्य गुरुदेव ने स्मरण-भजन, जप-तप, ध्यान-मौन, साधना-आराधना के बल पर अपने-आपको स्वस्थ करने का उपक्रम भी किया। स्वास्थ्य में कुछ सुधार देखकर स्थानक में भ्रमण करने के अभ्यास से धीरे-धीरे ही सही, विहार करने का निश्चय किया। पूज्य गुरुदेव ने 8 फरवरी को सायं करीब 4 बजे रणसी गाँव स्थानक से विहार किया और करीब डेढ़ किलोमीटर दूर तक पधार एक फैक्ट्री विराजे। दिनांक 9 फरवरी को रणसी गाँव-खेजड़ला पधारे। दिनांक 11 फरवरी को रुणकिया, 12 को चिरढाणी, 13 को गोशाला के पास विराजकर 14 फरवरी को गुरु हस्ती-गुरु हीरा की जननी-जन्मभूमि पुण्यधरा पीपाड़ में जय-जयकारों के गगनभेदी जयनादों के साथ पूज्य गुरुदेव का श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत स्वाध्याय भवन में भव्य प्रवेश हुआ।

मध्यान्तर के ग्राम-कस्बों-ढाणियों में संघ पदाधिकारियों का, समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रद्धालुओं का, चातुर्मास के लिए विनति करने वाले श्री संघों का, घर-परिवार में गमी हो जाने पर गुरुदेव के दर्शन-वन्दन एवं मांगलिक

श्रवण करने वालों का, नव-विवाहितों का गुरु आम्नाय करवाने वाले परिजनों का आवागमन हर स्थान पर बना रहा। गाँव-कस्बों के जैन-जैनेतर जन समुदाय ने आगत गुरुभक्तों का आतिथ्य-सत्कार का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

पीपाड़ पधारने पर पीपाड़वासियों को पूरा विश्वास था कि पूज्य आचार्य भगवन्त कल्पकाल तक तो यहाँ विराजेंगे ही, पर दूरदर्शी महापुरुष ने 20 फरवरी को सायं 4 बजे के लभगभ स्वाध्याय-भवन से विहार किया और रेल्वे स्टेशन के समीप प्रिन्स विद्यालय विराजे। एक दिन पीपाड़-बोयल के बीच गुलशन फार्म विराज कर पूज्य गुरुदेव बोयल पधारे। एक दिन बोयल विराजकर 23 फरवरी को पूज्य श्री जैन तीर्थ कापरड़ा पधारे। कापरड़ा में आचार्यप्रवर दो दिन विराजे। 24 फरवरी को आचार्य भगवन्त की आज्ञानुवर्ती सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 3 को दर्शन-वन्दन एवं सेवा का लाभ मिला। आचार्यप्रवर ने 25 फरवरी को कापरड़ा से सुख-साता पूर्वक विहार किया। मध्यान्तर की दो ढाणियों में एक-एक विराज कर पूज्य श्री बाला पधारे।

आचार्यप्रवर ने बाला से विहार तो किया किन्तु ''चलने की स्थिति नहीं है'' जान-समझकर संतों के सहयोग से विहार-क्रम को बनाए रखा गया। मध्यान्तर के ग्रामों को स्पर्श करते-करते 12 मार्च को पूज्य गुरुदेव पाली के औद्योगिक क्षेत्र स्थित सुश्रावक श्री केवलचन्द जी गोलेच्छा की फैक्ट्री पधारे।

बाला और बाला के पश्चात मध्यान्तर के गाँवों में जोधपुर-जयपुर-पाली जैसे नगरों के प्रख्यात डाक्टरों को लाने में संघ के पदाधिकारियों ने श्रमणोचित औषधोपचार की व्यवस्था में कोई कमी नहीं रखी। जोधपुर के डाक्टर अभिषेक जी तातेड़ ने बीच-बीच में पूज्य गुरुदेव के स्वास्थ्य की देखरेख की और उपचारार्थ दवाएं भी लिखी। जयपुर के सुज्ञ श्रावकों ने यह सोचकर कि डॉ. सदासुखी जी संतों की भावना से सेवा करते हैं वे डॉ. सदासुखीजी को लेकर आए। डॉक्टर साहब ने टेस्टिंग करवाने का परामर्श दिया और चलते उपचार को एवं गुरुदेव के स्वास्थ्य को भी देखा। गुरुदेव की पाली की ओर विहार-यात्रा संतों के सहयोग से बराबर चल रही थी। संत-मुनिराज भी बिना थके-बिना रुके अपने आराध्य गुरुदेव को लाने में उत्साहित रहे।

विहार-यात्रा की मुख्य बातों का सार-संक्षेप इस प्रकार है-

1. संघनायक स्वास्थ्य की प्रतिकूलता में आचार-धर्म की पालना में दृढ़ रहे।
2. संत-मुनिराजों ने बिना थके-बिना रुके नियत-निर्धारित समयावधि में विहार-यात्रा सम्पन्न करवाने में अन्तर्हृदय से सहयोग बनाए रखा वह गुरु-सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण है।
3. गाँव-गाँव में जैनेतर परिवारजनों ने गुरुदेव के विराजने हेतु स्थान के साथ आहार-पानी में भक्ति-भावना का परिचय दिया, वह वस्तुतः अनुपम उदाहरण है। ग्रामीण क्षेत्रों के भक्तों ने आगत दर्शनार्थियों की भोजनादि की स्वतः व्यवस्था की, वह भी अनुकरणीय-अनुमोदनीय कही जा सकती है।
4. विचरण-विहार में पाली संघ ने आगत दर्शनार्थियों के लिए भोजनादि की व्यवस्था

तो की ही, दर्शनार्थियों को पाली से गुरुदेव के विराजने के स्थान पर लाने-ले जाने का सहयोग किया, वह प्रेरणादायी हो।

5. विचरण-विहार में पाली के साथ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पदाधिकारियों ने विहार-सेवा में प्रशस्त भावना दर्शायी, वह श्रद्धा-भक्ति का आदर्श है।
6. पाली संघाध्यक्ष श्री छगनलालजी लोढ़ा, मंत्री श्री रजनीशजी कर्नावट सहित सकल जैन समाज के सुज्ञजनों ने विहार-सेवा के साथ पाली में पूज्य गुरुदेव के टेस्टिंग एवं श्रमणोचित औषधोपचार का विवेक रखा, वह वस्तुतः अनूठा उदाहरण है।

-नौरतन मेहता

उपाध्यायप्रवर के पावन सान्निध्य से मिल रहा है जोधपुरवासियों को धर्मलाभ

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 7 सुखसातापूर्वक शक्तिनगर सामायिक-स्वाध्याय भवन में विराजमान है। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 जोधपुर के विभिन्न उपनगरों को फरसते हुए दिग्विजय नगर क्षेत्र में विराजमान हैं। जोधपुर के श्रावक-श्राविका निरन्तर धर्म-देशना सुनकर लाभान्वित हो रहे हैं। शक्तिनगर स्थानक में नियमित धार्मिक कार्यक्रमों में सभी श्रावक-श्राविकाएँ एवं युवा साथी बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। वैवाहिक प्रसंग एवं व्यापारिक समूह के सीजन का समय होने पर भी उसको गौण करते हुए प्रवचन सभा में अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ एवं युवक उपस्थित होकर गुरु भगवन्तों के प्रति सच्ची श्रद्धा की अभिव्यक्ति कर रहे हैं। युवा साथी सामायिक-साधना से जुड़े, इस हेतु सदैव प्रेरणा करते हुए श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. हर युवा साथी को सामायिक का महत्त्व समझाने का सुन्दर प्रयास कर रहे हैं, प्रति रविवार स्थानीय युवा साथी अच्छी संख्या में इसका लाभ भी ले रहे हैं। युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री गजेन्द्र जी चौपड़ा ने 'गुरु हस्ती के दो फरमान, सामायिक-स्वाध्याय महान्' के संदेश को हर युवा साथी तक पहुंचाने हेतु हर माह के अंतिम रविवार को पूरे जोधपुर के युवा साथियों की सामूहिक सामायिक का अलग-अलग क्षेत्र में आयोजन करने का आह्वान किया है, इस कड़ी में प्रथम सामूहिक सामायिक कार्यक्रम उपाध्याय भगवंत के सान्निध्य में 31 मार्च 2019 रविवार को प्रातः 7 से 8 बजे तक रखी गई है।

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 के जोधपुर शहर के उपनगरों में विराजने से वहां के श्रावक-श्राविकाओं को सामायिक-स्वाध्याय, ज्ञानार्जन तथा त्याग-तप आराधना का सुन्दर अवसर प्राप्त हो रहा है। प्रातःकालीन धर्मकक्षा, प्रवचन, दोपहर शास्त्र वाचन, सायंकाल प्रतिक्रमण एवं ज्ञानचर्चा के लाभ से सभी आबाल-वृद्ध लाभान्वित हो रहे हैं। उपनगरों में रहने वाले श्रावक-श्राविका धर्माराधना के साथ आतिथ्य सेवा में भी अपनी अहम भूमिका निभा रहे है। जोधपुर संघ अध्यक्ष श्री सुभाष जी गुन्देचा सहित उनकी पूरी टीम सभी प्रकार की व्यवस्थाओं में

सक्रिय रूप से संलग्न है। व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. के ऑपरेशन के पश्चात् अब स्वास्थ्य में सुधार है। श्रीसंघ महासती जी के शीघ्र स्वस्थ होने की मंगलकामना करता है। सभी सती मण्डल महासती जी की सेवा में बासनी द्वितीय फेस में विराजमान है।

धर्मसाधना के साथ-साथ तप-साधना की कड़ी में आयम्बिल की लड़ी निरन्तर चल रही है साथ ही कई एकान्तर तपस्या करने वाले भी निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं। फाल्गुनी चौमासी के अवसर पर कई श्रावका-श्राविकाओं ने तेले की तपस्या की और रात्रि संवर एवं पौषध करने का अच्छी संख्या में श्रावकों के साथ युवा साथियों ने लाभ लिया। दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर जारी है। शक्तिनगर के कार्यकर्ता उत्साहपूर्वक सेवा में आनन्द की अनुभूति कर रहे हैं।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की संचालन समिति की बैठक का आयोजन पाली–मारवाड़ में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की संचालन समिति की बैठक शनिवार-रविवार दिनांक 13-14 अप्रेल 2019 को पाली-मारवाड़ में आयोजित की जा रही है।

आगामी चातुर्मासों की घोषणा 13 अप्रेल 2019 को संभावित

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने वर्ष 2019 के कतिपय चातुर्मास चैत्र शुक्ला अष्टमी, शनिवार, तदनुसार 13 अप्रेल 2019 को स्वीकृत करने की भावना दर्शायी। विनतियाँ करने वाले श्रीसंघ सूचित रहें।

तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय–तृतीया पर एकान्तर तप–साधकों से निवेदन

16 मार्च 2019 को प्रवचन सभा में महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने पूज्य आचार्य भगवन्त के निर्देशानुसार साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय-तृतीया की पाली संघ को स्वीकृति प्रदान की, जिससे पाली संघ हर्षित एवं प्रमुदित हैं। तप-साधक पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से वैशाख शुक्ला तृतीया, मंगलवार, तदनुसार 7 मई 2019 को पाली में तप और दान का महात्म्य श्रवण कर संघ के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में पारणक करेंगे।

इस अवसर पर संघनायक के श्रीचरणों में उपस्थित होकर जो भी तपस्वी भाई-बहिन दान एवं तप के महात्म्य को श्रवण कर नवीन त्याग प्रत्याख्यान ग्रहण करना चाहते हैं, वे सभी साधक इस अवसर पर अपने पधारने की स्वीकृति नाम एवं सदस्य संख्या का उल्लेख करते हुए संघ के प्रधान कार्यालय नेहरुपार्क जोधपुर, ईमेल- absjrhssangh@gmail.com, फोन नं.0291- 2636763 / 2641445 पर एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सुराणा मार्केट, पाली-मारवाड़ (राज.) पर अवश्य

प्रेषित करावें। पाली के सम्पर्क सूत्र- 1. श्री छगनचन्दजी लोढ़ा, अध्यक्ष- 94141-21519, 2. श्री रजनीशजी कर्नावट, मंत्री-94141-20745, श्री महिपाल जी रेड, पारणक व्यवस्था प्रभारी- 94141-22779

-धनपत सेठिया, संघ महामंत्री

संघ की विभिन्न शाखाओं में पदाधिकारियों का मनोनयन

दिनांक 16 अक्टूबर 2018 को बैंगलोर शाखा में अध्यक्ष के रुप में श्री पदमचंदजी मेहता, मंत्री के रुप में श्री गौतमचंद जी ओस्तवाल एवं कोषाध्यक्ष के रूप में श्री जसवन्तराजजी छाजेड़ का मनोनयन हुआ।

दिनांक 16 दिसम्बर 2018 को हिडौन सिटी शाखा में अध्यक्ष के रुप में श्री अशोक कुमारजी जैन, मंत्री के रुप में श्री धर्मचंदजी जैन एवं कोषाध्यक्ष के रुप में श्री कैलाशचंदजी जैन का मनोनयन हुआ।

27 दिसम्बर, 2018 को चेन्नई शाखा के अध्यक्ष के रूप में वीरपिता श्री प्रेमकुमारजी कवाड़-पुन्नमल्लै का मनोनयन किया गया।

दिनांक 29 दिसम्बर 2018 को गंगापुर सिटी शाखा में अध्यक्ष के रुप में श्री जितेन्द्रसिंहजी जैन सेवानिवृत्त थानेदार, मंत्री के रुप में श्री राकेशकुमारजी जैन (पल्लीवाल) तथा कोषाध्यक्ष के रुप में श्री धर्मेशकुमारजी जैन का मनोनयन हुआ।

दिनांक 12 जनवरी 2019 को जयपुर शाखा में अध्यक्ष के रुप में श्री प्रमोदजी महनोत, मंत्री के रुप में श्री सुरेशचंद्रजी कोठारी, कोषाध्यक्ष के रुप में श्री श्रीचंदजी बेताला का मनोनयन हुआ।

दिनांक 24 फरवरी 2019 को बजरिया शाखा में अध्यक्ष के रुप में श्री मुकेश कुमार जी जैन 'पान वाले,' मंत्री के रुप में श्री पदमचंदजी जैन गोटेवाले, कोषाध्यक्ष के रुप में श्री मुकुल कुमार जी जैन कुण्डेरा वालो का मनोनयन हुआ।

संघ की जिन शाखाओं में नवीन पदाधिकारियों का मनोनयन हो गया है, उन्हें संघ द्वारा हार्दिक बधाई। साथ ही शेष शाखाओं से निवेदन है कि वे अपने यहां नवीन पदाधिकारियों का शीघ्र मनोनयन कर सूचना संघ कार्यालय को भिजवाने का श्रम करावें।

श्राविका मण्डल द्वारा पंचागम परीक्षा का परिणाम घोषित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित पंचागम परीक्षा का परिणाम दिनांक 28 फरवरी, 2019 को घोषित कर दिया गया है। इस परीक्षा में कुल 3439 परीक्षार्थियों ने भाग लिया। जिसमें से 3432 परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए। वरीयता सूची में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों के नाम इस प्रकार है-

प्रथम- श्रीमती रश्मिजी अनुरागजी जैन-बड़ौत, बागपत (उत्तरप्रदेश) (497 अंक)
द्वितीय-श्री महेन्द्रजी मोहनलालजी जैन-पाली (राज.) (496.5 अंक)
तृतीय- श्रीमती नीलिमाजी सचिनजी सांखला-पीपलगांव बसवंत, नाशिक (496 अंक)

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 21 जुलाई 2019 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा दिनांक 21 जुलाई-2019, रविवार को दोपहर 12.30 बजे से आयोजित की जाएगी।

1. परीक्षा, ज्ञान वृद्धि का प्रमुख साधन है। क्रमबद्ध एवं सही ज्ञान ही व्यक्ति को हित-अहित की जानकारी कराता है। अतः ज्ञान बढ़ाने एवं सुसंस्कार पाने हेतु आप स्वयं भी परीक्षा दे तथा अन्य भाई-बहनों को भी परीक्षा में भाग लेने की प्रभावी प्रेरणा कर धर्म दलाली का लाभ प्राप्त करें।
2. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र नया प्रारंभ किया जा सकता है।
3. परीक्षा से सम्बन्धित पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।
4. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार व मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।
5. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरकर जमा कराने की अंतिम दिनांक 21 जून-2019 है।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- शिक्षण बोर्ड कार्यालय- सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज) 291-2630490।

रत्नम् में रत्नसंघ से सम्बन्धित समाचारों का प्रकाशन

रत्नसंघ का मुखपत्र 'रत्नम्' वर्तमान में लगभग 8000 संघ-सदस्यों की सेवा में प्रेषित किया जा रहा है। अनेक संघ-सदस्यों का सुझाव था कि जिनवाणी पत्रिका से समाचारों का भार कम कर बचे हुए स्थान पर आवश्यक एवं पठनीय लेख प्रकाशित किए जाए, ताकि जन-साधारण को अच्छी एवं रुचिकर पठनीय सामग्री प्राप्त हो सके। इस सुझाव को ध्यान में रखते हुए धीरे-धीरे जिनवाणी पत्रिका से समाचारों को रत्नम् में संयोजित करने का प्रयास रहेगा। अतः रत्नसंघीय सदस्यों से निवेदन है कि आपके यहाँ सम्पन्न होने वाले कार्यक्रमों की रिपोर्ट आप संघ कार्यालय को पत्र या ईमेल द्वारा भिजवाते रहें। आप अपनी सूचना व्हाट्सअप नं. 94610-26279 पर भी भिजवा सकते हैं। -प्रकाश सालेचा, सम्पादक

जैन धार्मिक संस्कार एवं स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर 18 अप्रेल को जलगांव में

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ द्वारा दिनांक 18 से 21 अप्रेल 2019 को रतनलाल सी.बाफना गोसेवा अनुसंधान केन्द्र, अहिंसा तीर्थ, कुसुंबा, जलगांव में जैन धार्मिक संस्कार एवं स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में विद्वान् अध्यापकों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा। शिविर में भाग लेने हेतु सम्पर्क करें- श्री शुभम बोहरा, प्रचारक-8085893817

केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर 04 जून को जोधपुर में

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक 4 से 9 जून 2019 तक परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के पावन सान्निध्य में जोधपुर में आयोजित किया जा रहा है। उक्त शिविर में वे ही स्वाध्यायी भाई-बहन भाग ले सकेंगे जो इस वर्ष पर्युषण महापर्व में अपनी सेवाएं प्रदान करेंगे। शिविर में भाग लेने वाले स्वाध्यायी बन्धुओं को प्रतिक्रमण कण्ठस्थ होना अनिवार्य है। शिविर की अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- श्री सुभाष जी हुण्डीवाल-संयोजक, 9460551096, श्री सुनील जी संकलेचा-सचिव, 9413844592, श्री धीरज जी डोसी-कार्यालय प्रभारी, 9462543360, 0291-2624891, 9414126279

विदर्भ क्षेत्र में प्रचार–प्रसार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 14 से 19 मार्च 2019 तक आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें स्वाध्याय संघ के सह-सचिव श्री जिनेन्द्रजी जैन-मुम्बई, विदर्भ शाखा के सह-संयोजक श्री महेन्द्रजी कटारिया-नागपुर, स्वाध्याय संघ के कार्यालय प्रभारी श्री धीरजजी डोसी, शिक्षण बोर्ड के कार्यालय प्रभारी श्री पंकजजी गांग-जोधपुर, रत्नसंघ के प्रचारक श्री शुभमजी बोहरा-जलगांव की महनीय सेवाएं प्राप्त हुई। विदर्भ क्षेत्र के सदर नागपुर, पश्चिम नागपुर, वर्धमान नगर-नागपुर, खापरखेड़ा, कामठी, पारसिवनी, साबनेर, वर्धा, हिंगणघाट, माडेली, वरोरा, चन्द्रपूर, वणी, पाढरकवाड़ा, पोहना, रालेगांव, कलम्ब, यवतमाल, नेर, बाभुलगांव, पुलगांव, आर्वी, धामणगांव, चांदुररेलवे, अमरावती, परतवाड़ा, बडनेरा आदि क्षेत्रों में प्रवास हुआ। प्रचार-प्रसार कार्यक्रम में पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी बुलाने की प्रेरणा के अन्तर्गत चार क्षेत्रों की मांग प्राप्त हुई। नये स्वाध्यायी बनाने की प्रेरणा से आठ नये स्वाध्याय बनें। शिक्षण बोर्ड की परीक्षा के नये केन्द्र प्रारम्भ किए गए तथा चल रहे केन्द्रों को सक्रिय करने हेतु तथा परीक्षा में संख्या बढ़ाने हेतु प्रभावी प्रेरणा की गई। प्रचार-प्रसार के माध्यम से सभी श्रावक-श्राविका, युवा एवं बालक-बालिकाओं को निर्व्यसनतापूर्वक सामूहिक-सामायिक आराधन की प्रेरणा की गई तथा स्थानक भवन में आकर सामूहिक रूप से सामायिक करने का संकल्प करवाया गया। नियमित एवं साप्ताहिक चल रही धार्मिक पाठशालाओं का भी निरीक्षण किया गया। -सुभाष हुण्डीवाल, संयोजक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को प्राप्त साभार

संघ–सेवा सोपान

250000/- श्री सुभाषचन्दजी, अशोककुमारजी, विपीनजी, पुनीतजी, यशजी धोका, मैसूर (कर्नाटक)

संघ–सहयोग

2100/- श्रीमती पारसदेवीजी, सुनीलजी, विनम्रजी झामड़, जयपुर, श्रावकरत्न श्री हेमचन्दजी झामड़ की 25 फरवरी, 2019 को प्रथम पुण्यतिथी पर जीवदया हेतु सप्रेम भेंट।

1500/- श्रीमती अनिताजी सुपुत्री श्री मोहनलालजी बोथरा, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1100/- श्री दिलरूपचन्दजी, संदीपजी भण्डारी, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1100/- श्री राजेन्द्र जी चोरडिया, बैंगलुरू, संघ सहायता।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

41000/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन भवन, गोहाटी (असम), पर्युषण सहयोग।

11000/- श्री राजुलालजी, नरेन्द्रमोहनजी, सुरेशचन्दजी, अनोखचन्दजी, महावीरप्रसादजी जैन 'श्यामपुरा वाले', सवाईमाधोपुर, वीर दादीजी स्व. श्रीमती गाजादेवी जी जैन धर्मपत्नी श्री राजुलालजी जैन की पुण्यस्मृति में भेंट।

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, को प्राप्त साभार

11000/- श्री राजुलालजी, नरेन्द्रमोहनजी, सुरेशचन्दजी, अनोखचन्दजी, महावीरप्रसादजी जैन 'श्यामपुरा वाले', सवाईमाधोपुर, वीर दादीजी स्व. श्रीमती गाजादेवी जी जैन धर्मपत्नी श्री राजुलालजी जैन की पुण्यस्मृति में भेंट।

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, को प्राप्त साभार

2000/- श्री नथमलजी तालेड़ा, चेन्नई, सहयोगार्थ।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड (अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित) दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

100000/-श्री अम्बालालजी कर्नावट, साहुकारपेठ, चेन्नई (तमिलनाडु)

100000/-श्री दलीचन्दजी सुरेशकुमारजी कवाड़, पुन्नमल्लै, चेन्नई (तमिलनाडु)

100000/-श्री सम्पतराजजी भण्डारी, ट्रीपलिकेन, चेन्नई (तमिलनाडु)

51000/- श्री विनीतजी गोठी, किशनगढ़-मुम्बई (महा.)

50000/- श्री सुभाषमलजी, सुमितजी, रौनकजी लोढ़ा, मण्डावली, चेन्नई (तमि.)

24000/- श्री जीतमलजी जैन (अरिहंत धर्मार्थ न्यास), पंचवटी, अलवर (राज.)

21000/- श्री भागचन्दजी कोचेटा, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राज.)

12000/- श्रीमती पुष्पा गणपतजी बागमार, चिंतादरी पेठ, चेन्नई (तमिलनाडु)

12000/- श्रीमती उषा सुरेशजी जैन, भरतपुर (राज.), श्रीमती उषाजी जैन के वर्षीतप के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री प्रकाशमलजी चोरड़िया, साहूकारपेठ, चेन्नई (तमिलनाडु), अपनी सुपौत्री सौ. कां. किर्ती सुपुत्री श्री शेखरजी चोरडिया का शुभविवाह 08 फरवरी, 2019 को सानन्द सम्पन्न होने पर।

12000/- श्री रंगरूपमलजी चोरडिया, चेन्नई (तमिलनाडु)

12000/- श्री पंकजजी जैन सुपुत्र श्री पी.आर. जैन, महामंदिर, जोधपुर (राज.)

6000/- श्री विपिनजी विजयराज जी बाफना, ठाणे, मुम्बई (महा.)

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें। Sh. M. Harish Kawad, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056 (T.N.), (Mobile No. 95430-68382)

सामायिक उपकरण संघ कार्यालय में उपलब्ध

रत्नसंघ के प्रधान कार्यालय में सामायिक उपकरण का सेट लागत मूल्य से भी कम रियायती दर पर 200/- रुपये में उपलब्ध है।

आगामी पर्व

चैत्र कृष्णा	14	गुरुवार	04.0402019	चतुर्दशी, पक्खी
चैत्र शुक्ला	6	गुरुवार	11.04.2019	आयम्बिल ओली प्रारम्भ
चैत्र शुक्ला	8	शनिवार	13.04.2019	अष्टमी
चैत्र शुक्ला	13	बुधवार	17.04.2019	महावीर जन्म कल्याणक
चैत्र शुक्ला	14	गुरुवार	18.04.2019	चतुर्दशी
चैत्र शुक्ला	15	शुक्रवार	19.04.2019	पक्खी, आयम्बिल ओली पूर्ण
वैशाख कृष्णा	8	शनिवार	27.04.2019	अष्टमी

BOOK PACKETS CONTAINING PERIODICALS Value of Periodical From Rs.1/- to Rs.20/- For First 100 gms or part thereof Rs. 2/-

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक धनपत सेठिया द्वारा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.) से प्रकाशित एवं इण्डियन मैप सर्विस, सेक्टर-जी, राममन्दिर के पास, शास्त्रीनगर, जोधपुर से मुद्रित सम्पादक-प्रकाश सालेचा
Website- www.ratnasangh.com, Email : absjrhssangh@gmail.com

इस अंक का सौजन्य- गुरुभक्त संघनिष्ठ श्री कनकराज जी महेन्द्र जी कुम्भट-जोधपुर, मुम्बई